बनवारीलाल माड़साब और उनके सवाल

मोहम्मद उमर

प्राथमिक स्कूल के एक साधारण शिक्षक बनवारीलालजी के सेवाकालीन अनुभवों और उनकी सादगी के माध्यम से मोहम्मद उमर ने अपने आलेख में यह बताने की कोशिश की है कि तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद दूर दराज़ के इलाकों में शिक्षक किस तरह अर्थपूर्ण काम कर रहे हैं। साथ ही लेखक ने इस बात का इशारा भी किया है कि गैर अकादमिक प्रशासकीय दायित्वों के चलते किस प्रकार शिक्षकीय कार्य प्रभावित होता है। बनवारीलाल माड़साब* जैसे जीवट व्यक्ति इन्हीं अनुभवों के ख़ज़ाने से बच्चों के लिए भी सीखने सिखाने के मोती निकाल लाते हैं। सं.

"करि दूँगा, पण दो-पाँच दिनां को टेम तो दो साब!" विनती करते हुए बनवारीलालजी ने कहा। उधर, दूसरी तरफ़ से आ रही ग़ुस्से से भरी एक आवाज़ को कुछ देर सुनने के बाद वे समझ चुके थे कि इस काम को जल्द से जल्द पूरा करके भेजना होगा।

"वा ठीक। हमज ग्यो साब, शनिवार तक भेज दूँगा," यह कहकर उन्होंने फ़ोन रख दिया।

यह फ़ोन, बीईईओ ऑफ़िस, यानी ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय से था। गाँव में कितने शौचालय बन चुके हैं, कितने में काम जारी है, आदि-आदि... इस तरह की कई सूचनाओं को जल्द से जल्द भेजने के लिए कहा जा रहा था। फ़ोन आने से पहले बनवारीलालजी अपने स्कूल में इस साल नया दाख़िला लेने वाले सभी बच्चों की लिस्ट तैयार कर रहे थे। उन्होंने लिस्ट को अलमारी में रखी फ़ाइलों के बीच दबाकर रख दिया। काग़ज़ों का एक पुलिन्दा अपने हाथ में लेकर निकल पड़े। बाहर 'भोजन माता' अभी आटा सान रही थी।

"टेम ऊँ घण्टी लगाई दीजे और सब टाबराँ ने खाणों खिलाई दीजे...और ध्यान राखजे...कि आपस में लड़ाई-झगड़ो नी करै। मुँ छुट्टीऊँ पैलाँ आई जाउँ," बनवारीजी ने अपनी मोटर साइकिल उठाते हुए कहा। अब रोज़ गाँव में घर-घर घूमकर उन्हें शौचालयों के निर्माण से जुड़ी सारी सूचना इकट्ठा करनी होगी। इन सभी काग़ज़ों को भरना होगा...और शनिवार तक तैयार करके जमा भी कराना होगा।

अभी हाल में ही बनवारीलाल माड़साब ने अपनी उम्र का पचपनवाँ साल पूरा किया है। इसमें से सत्ताइस साल तो उन्होंने राजस्थान के सरकारी स्कूलों में मास्टरी करते हुए बिता डाले हैं। इतने बरसों में इस ज़िले से उस ज़िले, इस ब्लॉक से उस ब्लॉक, इस स्कूल से उस स्कूल, तमाम बार उनका स्थानान्तरण होता रहा है। इसके चलते उन्होंने पूरे राजस्थान के भूगोल को बहुत अच्छे से आत्मसात कर लिया है। फ़लाँ जगह से फ़लाँ जगह की दूरी कितने किलोमीटर है और कहाँ से कितने बजे की बस गुज़रती है, सब कुछ उन्हें जुबानी याद है। यूँ तो पुश्तैनी तौर पर वे भरतपुर ज़िले के रहने वाले हैं,लेकिन पिछले कई सालों से इस इलाक़े में रहकर, आम लोगों के बीच लम्बा वक़्त बिताने के कारण, अब

* मास्टर साहब, स्थानीय बोलचाल में 'माड़साब' कहलाते हैं ।

वे मेवाड़ी और मारवाड़ी भाषा भी ठीक-ठाक समझ-बोल लेते हैं।

सत्ताइस साल पहले बनवारीलालजी ने राजस्थान के सिरोही ज़िले के एक प्राथमिक स्कूल में अकेले शिक्षक के रूप में जॉइनिंग प्राप्त की थी। विभाग आज भी ऐसे स्कूलों को 'सिंगल टीचर स्कूल' या 'एकल विद्यालय' कहकर सम्बोधित करता है, गोया यह कोई बहुत अच्छी योजना हो और विभाग इस योजना को लागू करके बहुत फ़ख़्र महसूस कर रहा हो। रोज़ सुबह धुर बबूल के जंगलों के बीच से तक़रीबन 17 किलोमीटर साइकिल चलाकर (तब उनके पास एक टुटही साइकिल हुआ करती थी) बनवारीलाल माड़साब अपने स्कूल पहुँच पाते थे। गाँव तो क्या था, ढाणी कहिए। कुछ ही घर बसे थे। अकेले थे, सो जो पढ़ा पाते थे, पढ़ा देते थे। कक्षाएँ बस हाज़िरी रजिस्टर पर ही नज़र आती थीं। बच्चों को अलग-अलग बैठाने के लिए न तो कमरे थे और न ही शिक्षक। बीईईओ साब, पूरे ब्लॉक की शिक्षा व्यवस्था को सम्भालने वाले आला अधिकारी थे। वे बस एकाध बार ही इस स्कूल तक आए थे। बाक़ी के काग़ज़-पत्तर का काम समझने-करने के लिए माड़साब को ही ब्लॉक कार्यालय पर बुला लिया जाता था। इस सबके बावजूद बनवारी लाल माड़साब ज़्यादातर बच्चों को दूसरा दर्जा पूरा करने तक किताब पढ़ना और कुछ सरल वाक्यों को लिखना सिखा देते थे। गाँव में माड़साब की इज़्ज़त थी। लोग उनका बहुत मान करते थे।

सत्ताइस साल पहले बनवारीलालजी ने राजस्थान के सिरोही ज़िले के एक प्राथमिक स्कूल में अकेले शिक्षक के रूप में ज्वॉइनिंग प्राप्त की थी। विभाग आज भी ऐसे स्कूलों को 'सिंगल टीचर स्कूल' या 'एकल विद्यालय' कहकर सम्बोधित करता है, गोया यह कोई बहुत अच्छी योजना हो और विभाग इस योजना को लागू करके बहुत फ़ख़्र महसूस कर रहा हो। रोज़ सुबह धुर बबूल के जंगलों के बीच से तक़रीबन 17 किलोमीटर साइकिल चलाकर वे स्कूल पहुँच पाते थे।

तबादलों की ऐसी ही एक प्रक्रिया के तहत तक़रीबन नौ साल पहले बनवारीजी का तबादला पाली ज़िले के एक गाँव में हो गया। यहाँ सबसे अच्छी बात यह थी कि एक शिक्षक पहले से ही नियुक्त थे। लम्बे समय तक अकेले ही स्कूल में काम करने के बाद उन्हें एक और साथी पाकर बहुत अच्छा महसूस हो रहा था। इस स्कूल में कुल 67 बच्चे नामांकित थे। कुछ अपने छोटे भाई-बहन को भी लेकर स्कूल आते थे। माँ-बाप खेतों में मज़दूरी करने चले जाते थे। इन छोटे बच्चों की देखभाल करने वाला घर पर कोई भी नहीं होता था। ऐसे में स्कूल ही सबसे मुफ़ीद जगह थी। माड़साब के काम और विनम्र व्यवहार के चलते जल्द ही इस गाँव के लोग भी दिल से उनकी इज़्ज़त करने लग गए थे। भेड़, बकरी और भैंस पालने वाले घरों से दूध-दही आ जाया करता था। तमाम अलग-अलग क़िस्म की दुश्वारियों के बाद भी बनवारी माड़साब अपने स्कूल के बच्चों की पढ़ाई में किसी क़िस्म का ख़लल नहीं पड़ने देते थे। वे पूरे मन से बच्चों को पढ़ाने का प्रयास करते थे।

अब उम्र बढ़ने के साथ ही उनके पैरों में कुछ तकलीफ़ होने लगी थी। घुटने में दर्द बना रहता था। सो, उन्होंने एक मोटर साइकिल ख़रीद ली थी। इसी से स्कूल आना-जाना करते थे। एक ही कमरे में बैठाकर बोर्ड पर सरल वाक्य लिख बारी-बारी से सबसे पढ़वाते। कुछ बच्चे बहुत अच्छे से पढ़ने लगे थे। बहुत सारे अभी हिज्जे करके ही पढ़ पाते थे। इसी तरह, गणित में भी कुछ ने जोड़ना और घटाना सीख लिया था, लेकिन बहुतों को 'हासिल' वाला घटाने में परेशानी होती थी।

यूँ तो नौकरी ज्वॉइन करने के बाद से ही बनवारीलालजी को तमाम प्रशिक्षणों में

जाने का मौक़ा मिलता रहा है। पाठ्यपुस्तकों के उपयोग, हिन्दी भाषा शिक्षण, गणित के टीएलएम बनाना, बच्चों का मूल्यांकन कैसे करें, पालकों (अभिभावकों) को कैसे जागरूक करें, आदि-आदि। इस तरह के तमाम प्रशिक्षणों में बनवारीलालजी शामिल रहे हैं।

शुरू में तो उन्हें अच्छा लगता था। वे अपनी समस्याओं को अपने साथियों के बीच रख पाते थे। उनकी बातों और उनके अनुभवों को सुन पाते थे। इस सबसे उन्हें भी कुछ दिशा मिलती थी। अपने स्कूल को कैसे बेहतर बनाएँ? कैसे बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाएँ? विभाग से आने वाले पत्रों का जवाब किस तरह तैयार करें? इस तरह के तमाम सवालों का जवाब उन्हें इन प्रशिक्षणों में अपने साथियों से मिल पाता था। ऐसे ही एक प्रशिक्षण में उनकी तरह ही एकल विद्यालय में कार्यरत एक अन्य शिक्षक साथी ने उन्हें बताया था कि छोटी कक्षाओं के बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने में बड़ी कक्षाओं के कुछ होशियार बच्चों की मदद ली जा सकती है। बनवारी माड़साब ने भी ऐसा ही किया। इस तरह, अब वे एक साथ एक ही समय में दो से तीन कक्षाओं को सम्भाल लेते हैं। उनके स्कूल में बच्चों के स्तर में काफ़ी सुधार हुआ है।

बनवारीलालजी को अपने पेशे से सम्बन्धित प्रशिक्षणों में तो अनिवार्य रूप से जाना ही पड़ता था। वहाँ जाकर वे अपने स्कूल और उसमें आने वाले बच्चों की बेहतरी के लिए कुछ न कुछ नया अवश्य सीखकर आते थे। लेकिन उन्हें ग़ुस्सा तब आता था, जब ऐन परीक्षाओं के पहले ही चेचक के टीके, पंचायत के चुनाव, वोटर-लिस्ट,बाल विवाह, जनगणना, शौचालय निर्माण इत्यादि से सम्बन्धित प्रशिक्षणों में भी झोंक दिया जाता था। वे लाख बच्चों की पढ़ाई में होने वाले नुक़सान की दुहाई देते, लेकिन उनकी एक न सुनी जाती। यह सिलसिला पिछले कुछ सालों में और भी ज़्यादा बढ़ गया।

अब, जब भी किसी प्रशिक्षण में जाने का आदेश प्राप्त होता है, तो बनवारीलाल माड़साब का मन उचाट होने लगता है। उन्हें यह सब नीरस लगने लगा था। वही घिसीपिटी बातें सुनकर, दसियों-बीसियों बार एक ही उदाहरण सुनकर उन्हें कोफ़्त होने लगी थी। प्रायः किसी भी प्रशिक्षण के पहले और आख़िरी दिन कोई न कोई अधिकारी अवश्य आ धमकता था। वह घण्टा, दो घण्टा भाषण देता। सभी शिक्षकों को धमकाता और समस्याओं को बिना समझे ही उनके समाधान बताने का प्रयास करता। ऐसे में बनवारीलालजी ख़ुद को चुप रखने का बहुत प्रयास करते, पर आदत से मजबूर थे। कुछ न कुछ उनके मुँह से निकल ही जाया करता था।

अब, जब भी किसी प्रशिक्षण में जाने का आदेश प्राप्त होता है, तो बनवारीलाल माड़साब का मन उचाट होने लगता है। उन्हें यह सब नीरस लगने लगा था। वही घिसी पिटी बातें सुनकर, दसियों-बीसियों बार एक ही उदाहरण सुनकर उन्हें कोफ़्त होने लगी थी। प्रायः किसी भी प्रशिक्षण के पहले और आख़िरी दिन कोई न कोई अधिकारी अवश्य आ धमकता था। वह घण्टा, दो घण्टा भाषण देता। सभी शिक्षकों को धमकाता और समस्याओं को बिना समझे ही उनके समाधान बताने का प्रयास करता।

अभी पिछले दिनों की ही बात है। बच्चों के सतत एवं व्यापक आकलन के मुद्दे पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण चल रहा था। बनवारीलालजी भी इसमें सहभागी थे। ज़िला शिक्षा अधिकारी जी आ गए और उन्होंने सभी से सवाल किया, "बताओ, एसआईक्यूयू (वे एसआईक्यूई को हमेशा एसआईक्यूयू ही कहते हैं) क्या है?"

एक शिक्षक ने खड़े होकर बताया, "एसआईक्यूई का मतलब है 'स्टेट इनिशिएटिव फ़ॉर क्वालिटी एजुकेशन' यानी 'गुणवत्ता शिक्षा के लिए राज्य की पहल'।'' ज़िला शिक्षा

अधिकारी साहब बहुत ख़ुश हुए। आमतौर पर उन्हें इतना अच्छा जवाब कम ही मिलता है। इस योजना को चलते हुए कई साल बीत चुके हैं, फिर भी बहुत से शिक्षक ठीक से एसआईक्यूई का फ़ुलफ़ॉर्म तक नहीं बता पाते हैं। इस शिक्षक ने न सिर्फ़ फ़ुलफ़ॉर्म बता दिया, बल्कि इस बात का हिन्दी में क्या मतलब है, यह भी बता दिया है।

आमतौर पर सदन से सही उत्तर न पाकर ज़िला शिक्षा अधिकारी जी नाराज़ होते। वे कहते, "इतने साल हो गए, अभी तुम्हें सरकार द्वारा चलाई जा रही इतनी बड़ी योजना का पूरा नाम भी नहीं मालूम है। शर्म आनी चाहिए तुम लोगों को। सरकार इतनी-इतनी तनख़्वाह दे रही है और तुम लोग अपने काम से लापरवाही कर रहे हो।" इसके बाद वे एसआईक्यूई की अपनी व्याख्या प्रस्तुत करते थे। उनकी यह बात इतनी प्रचारित हो चुकी थी कि अब सभी प्रशिक्षणों में 'मास्टर ट्रेनर' यानी एमटी ही सबसे पहले सभी सम्भागियों को एसआईक्यूई का फ़ुलफ़ॉर्म रटवा देते हैं। वे बोर्ड पर सबसे पहले एसआईक्यूई लिखते, फिर इसका फ़ुलफ़ॉर्म-स्टेट इनिशिएटिव फ़ॉर क्वालिटी एजुकेशन-लिख देते थे। कुछ लोगों को खड़ाकर पढ़ने को कहते और सभी से अपनी डायरी में लिखकर रखने का अनुरोध भी करते। वे कहते,"साहब आएँगे तो सबसे पहले यही पूछेगें।" आज इस प्रशिक्षण में भी ऐसा ही हुआ।

ज़िला शिक्षा अधिकारी ने कहा— "देखो, इतने बरसों से सरकार हम सभी शिक्षकों को मोटी-मोटी तनख़्वाह दे रही है। तमाम सुविधाएँ दे रही है। दूसरे विभागों में कर्मचारी से पूछताछ होती है कि उसने अपना काम पूरा किया कि नहीं। यहाँ पर कोई पूछने वाला नहीं है। स्कूल जाकर क्या पढ़ाया, कितना पढ़ाया? पढ़ाया या नहीं पढ़ाया? सब आपके ऊपर था। लेकिन अब ऐसे नहीं चलेगा। अब आरटीई आ गया है। आरटीई मतलब?"

यहाँ पर सन्तोषजनक उत्तर मिल जाने से ज़िला शिक्षा अधिकारी जी ख़ुश तो ज़रूर हुए, लेकिन आगे की बातों में उन्होंने वही सब कहा, जो वे नाराज़ होकर भी कहा करते थे। वे बोले, "देखो, इतने बरसों से सरकार हम सभी शिक्षकों को मोटी-मोटी तनख़्वाह दे रही है। तमाम सुविधाएँ दे रही है। दूसरे विभागों में कर्मचारी से पूछताछ होती है कि उसने अपना काम पूरा किया कि नहीं। यहाँ पर कोई पूछने वाला नहीं है। स्कूल जाकर क्या पढ़ाया, कितना पढ़ाया? पढ़ाया या नहीं पढ़ाया? सब आपके ऊपर था। लेकिन अब ऐसे नहीं चलेगा। अब आरटीई आ गया है। आरटीई मतलब?"

"राईट टू एजुकेशन," एक अन्य शिक्षक ने कहा।

"हाँ, अब राईट टू एजुकेशन आ गया है। अब कोई भी पालक आपसे सवाल कर सकता है— 'मैं इतने दिनों से अपना बच्चा आपके पास पढ़ाने के लिए भेज रहा हूँ। बताइए, मेरा बच्चा कुछ सीख क्यों नहीं रहा है? बताइए, मेरा बच्चा ऐसा ही क्यों है?'... एसआईक्यूई का मतलब है कि अब आपसे हर कोई सवाल पूछेगा कि बताओ मेरा बच्चा ऐसा ही क्यों है?" ज़िला शिक्षा अधिकारी जी की इस व्याख्या से शिक्षकों का अच्छा मनोरंजन हो जाता था। अब पूरे ज़िले के शिक्षक जान चुके थे कि 'सर, पहले एसआईक्यूई का फ़ुलफ़ॉर्म पूछते हैं, फिर यह बताते हैं कि सरकार और अभिभावक अब यह पूछ सकते हैं कि बच्चा ऐसा ही क्यों है?' कई जगह तो उनके प्रशिक्षण हॉल में प्रवेश करते ही शिक्षक आपस में फुसफुसाने लग जाते थे— 'एसआईक्यूई यानी बच्चा ऐसा ही क्यों है?...'

ख़ैर, अभी ज़िला अधिकारी महोदय अपनी बात रख ही रहे थे कि बनवारीलालजी उठ खड़े हुए— "सर, आप हम सभी के अधिकारी हैं। आपकी आज्ञा का पालन करना हम सभी शिक्षकों का कर्तव्य है। जहाँ तक सम्भव है, हम

सभी लोग ऐसा करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन, जब तक स्कूलों में पर्याप्त शिक्षक नहीं होंगे, तब तक बच्चों को शिक्षित करने का काम ठीक ढंग से नहीं किया जा सकता है," उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा।

"हमें सीसीई की डायरियाँ भी भरनी होती हैं, मध्याह्न भोजन भी बनवाना होता है," बनवारीजी कहते रहे, "हर सप्ताह बीईईओ ऑफ़िस से आँकड़े माँगे जाते हैं– वह भी हमें ही इकट्ठा कर भेजना होता है। पंचायत से लेकर विधानसभा और संसदीय चुनावों से पहले वोटर-लिस्ट अपडेट करनी पड़ती है। बताइए, हम शिक्षक क्या-क्या कर सकते हैं? इस सीसीई और एसआईक्यूई ने भी हमारा काम और बढ़ा दिया है। योजना डायरी, पोर्टफ़ोलियो, चैकलिस्ट, फ़ॉरमेटिव और समेटिव– न जाने क्या-क्या हमारे सिर पर आ गया है। यह पोर्टफ़ोलियो...प्रत्येक बच्चे के कार्य की प्रतियाँ उनके नाम की फ़ाइल में सम्भालकर रखनी हैं। कहाँ से लाएँ इतने सारे सादे काग़ज़? बच्चों के पास तो उनकी कॉपी-पेंसिल तक नहीं होती हैं...और सबके लिए अलग-अलग फ़ाइल कहाँ से लाएँ। स्कूल में इतना बजट ही कहाँ है?" यह सब कहते हुए बनवारीलालजी कुछ क्रोधित से हो गए थे।

"हमें सीसीई की डायरियाँ भी भरनी होती हैं, मध्याह्न भोजन भी बनवाना होता है," बनवारीजी कहते रहे, "हर सप्ताह बीईईओ ऑफ़िस से आँकड़े माँगे जाते हैं– वह भी हमें ही इकट्ठा कर भेजना होता है। पंचायत से लेकर विधानसभा और संसदीय चुनावों से पहले वोटर-लिस्ट अपडेट करनी पड़ती है। बताइए, हम शिक्षक क्या-क्या कर सकते हैं? इस सीसीई और एसआईक्यूई ने भी हमारा काम और बढ़ा दिया है।

ज़िला अधिकारी, बनवारीलालजी को पहले से जानते थे। इस तरह के तमाम सवालों का सामना वे अनेक बार कर चुके थे। सो, मुस्कराते हुए उन्होंने सभी सम्भागियों की ओर देखा। अपना चश्मा उतारकर जेब में रखते हुए बोले, "आप लोगों ने बनवारीलालजी का सवाल सुना। इनका प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण है। इन समस्याओं का हल हमें अपने स्तर पर खोजना होगा। मैं आपको एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात बता रहा हूँ। इसे हमेशा याद रखना। पूरी नौकरी आपके काम आएगी।" कुछ देर चुप रहकर वे फिर बोले, "देखिए, हम सब सरकारी नौकर हैं। सरकार हमें जो भी काम देगी, वह सब काम हमें करना है। अब यह हमारे ऊपर है कि हम इसे हँसकर करते हैं या रोकर करते हैं। देखो भाई, यह सारा मामला मैनेजमैण्ट का है। अपना मैनेजमैण्ट सुधार लो, सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा।"

फिर थोड़ा रुके, मुस्कराए और आगे बोले, "आप सभी ने चक्की वाले को देखा है। चक्की... जहाँ गेहूँ पिसाया जाता है! आपने देखा है कि लोग वहाँ पर गेहूँ पिसाने आते हैं। जितना गेहूँ वे घर से लेकर जाते हैं, चक्की वाला उतने ही वजन का आटा उनको तौलकर वापस देता है। इस बीच, चक्की पर कुछ ग्राहक ऐसे भी आते हैं जो दो-पाँच किलो आटा ख़रीदकर ले जाते हैं। चक्की वाला अपने घर-परिवार की रोटियों के लिए भी यहीं से आटा ले जाता है। रोज़ कम से कम एक-दो माँगने वालों को पाव-आध किलो आटा दान भी करता है। कभी आपने सोचा है कि यह आटा कहाँ से आता है? चक्की वाले ने तो सभी लोगों को उतना ही आटा दिया, जितना गेहूँ वे लेकर आए थे। फिर, यह जो आटा वह खुल्ला बेच रहा है, दान कर रहा है, अपने घर ले जा रहा है– यह कहाँ से आया होगा? कभी सोचा है आपने?" सब लोग स्तब्ध से सुन रहे थे।

"भाई, यही तो मैनेजमैण्ट है। हमें भी ऐसा ही मैनेजमैण्ट सीखना है, बनवारीलालजी," बनवारीजी को देखकर उन्होंने कहा।

चक्की वाले के मैनेजमैण्ट की कहानी

सुनकर कुछ के चेहरे पर मुस्कान तैर गई। ज़िला शिक्षा अधिकारीजी ने बिना कहे ही बहुत कुछ कह दिया था। पर बनवारीलालजी सन्तुष्ट नहीं थे। बनवारीलालजी के साथ यह कोई पहली बार थोड़े ही हो रहा था। वे पहले भी अपने सवाल कई बार रख चुके हैं। इसी तरह के जवाब उनको मिलते आ रहे हैं। ख़ैर, कुछ और बातचीत कर ज़िला अधिकारी चले गए। प्रशिक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस शैक्षणिक सत्र का आधे से ज़्यादा साल बीत चुका था। कई बच्चे ऐसे थे जिन्हें अभी ठीक से पढ़ना नहीं आता था। बनवारीलालजी ने सोच रखा था कि मोटे अक्षर और सुन्दर रंगीन चित्रों वाली कहानियों की मदद से इन बच्चों को पढ़ना सिखाएँगे। पिछले दिनों ज़िला स्तर पर लगे पुस्तक मेले से वे कई रंगीन चित्रों वाली किताबें लेकर आए थे। कुछ टीएलएम भी सरकार की तरफ़ से सभी स्कूलों को भेजा गया था। बनवारीलालजी लगातार कुछ दिन बच्चों के बीच उपस्थित रहकर बच्चों के साथ काम करना चाहते थे। वे अपने स्कूल में ठहरकर बच्चों को पढ़ाना चाहते थे, ताकि इस साल का निर्धारित कोर्स वे समय से पूरा कर सकें। वे आज कक्षा 3 के बच्चों के साथ गुणा के सवालों पर काम कर रहे थे, तभी उनके फ़ोन पर घण्टी बजी।

बीईईओ साहब के कार्यालय से आरपी भैरूलालजी का फ़ोन था। सूचना थी कि बनवारीलालजी को तीन दिन बाद ही एक और कार्यशाला में शामिल होने जाना पड़ेगा। यह कार्यशाला आगामी 'सूर्य नमस्कार कार्यक्रम' के लिए आयोजित की गई थी। सभी बच्चों तथा शिक्षकों को सूर्य नमस्कार सिखाया जाना था। बनवारीलालजी ने अपना माथा पकड़ लिया। वे रोज़ सुबह ही स्नान के तुरन्त बाद सूर्य देवता को जल अर्पित कर नमस्कार करते आ रहे हैं। लेकिन, यह सरकारी वाला सूर्य नमस्कार उनसे नहीं बन पाता है।

बीईईओ साहब के कार्यालय से आरपी भैरूलालजी का फ़ोन था। सूचना थी कि बनवारीलालजी को तीन दिन बाद ही एक और कार्यशाला में शामिल होने जाना पड़ेगा। यह कार्यशाला आगामी 'सूर्य नमस्कार कार्यक्रम' के लिए आयोजित की गई थी। सभी बच्चों तथा शिक्षकों को सूर्य नमस्कार सिखाया जाना था। बनवारीलालजी ने अपना माथा पकड़ लिया। वे रोज़ सुबह ही स्नान के तुरन्त बाद सूर्य देवता को जल अर्पित कर नमस्कार करते आ रहे हैं। लेकिन, यह सरकारी वाला सूर्य नमस्कार उनसे नहीं बन पाता है। यूँ तो वे बाबा रामदेवजी द्वारा किए जा रहे कामों के प्रशंसक रहे हैं, लेकिन यह सूर्य नमस्कार...अपने जोड़ों के दर्द के साथ भला वे कैसे कर सकेंगे?

"सरजी, मुँ काइं करूँगा वठे जार! मारऊँ कोई योगा व्हे नी। जवान छोराँ ने भेजो," उन्होंने आरपी भैरूलालजी से नए शिक्षकों को भेजने का अनुरोध करते हुए कहा।

भैरूलालजी नहीं माने– "माड़साब, यूँ काम नी चाले, आपणे सूर्य नमस्कार रा सब आसण बढ़ियाँऊँ हीखणे आणा पड़ेगा। आगले महीने ही सीएम मैडम री विजिट है, और जिला परिषद रा मैदान में आपरे स्कूल रा टाबराँ ने सूर्य नमस्कार करावणो पड़ेगा," उन्होंने बनवारीलालजी से थोड़ा सख़्त लहजे में कहा। बनवारीलालजी अपना सा मुँह लेकर रह गए। अब उनके सामने चुनौती यह थी कि इस उम्र में भी उन्हें बाबा रामदेव सी लचक अपने शरीर में लानी होगी। अनुलोम-विलोम और कपालभाती तो बन जाएगा, पर इस अश्वसंचालनासन का क्या करें? कैसे करेंगे?

ख़ैर, तीन दिन के इस प्रशिक्षण में चले तो गए, पर जब वापस लौटे तो उठ-बैठ पाना मुश्किल हो गया था। सुबह शौचालय में बैठते नहीं बनता था... किसी तरह बैठ भी जाते तो फिर खड़ा होते नहीं बनता था। बड़ी विकट

स्थिति थी। प्रशिक्षण से लौटते समय उनको सूर्य नमस्कार के सभी आसनों के फ़ोटोवाला पोस्टर दिया गया था और साथ में पतंजलि द्वारा प्रकाशित पुस्तिका भी दी गई थी। बनवारीलालजी ने यह पोस्टर स्कूल की दीवार पर टाँग दिया और बच्चों को सभी आसनों का नाम और उनसे शरीर को होने वाला लाभ भी बता दिया। थोड़ा बड़े एक लड़के को– जो उछलकूद में आगे रहता था– सभी के सामने खड़ा कर वैसा ही करने को कहा, जैसा पोस्टर में बना था। लड़के ने बहुत बढ़िया किया। बनवारीजी ने इसी लड़के को कल से रोज़ सुबह सभी को अभ्यास कराने का ज़िम्मा सौंप दिया।

इस तरह कुछ दिन बीते। बनवारीलालजी ने कमज़ोर बच्चों को छुट्टी के बाद भी एक घण्टा तक रोककर अलग से पढ़ाने का काम शुरू किया। बच्चे पटरी पर आ रहे थे। हिज्जे करके पढ़ने वाले अब थोड़ा और बेहतर तरीक़े से किताब पढ़ने लग गए थे। 'हासिल' वाले जोड़-घटाने के सवालों को करते समय भी होने वाली ग़लतियाँ कुछ कम हो गई थीं। बनवारीलालजी को भी अच्छा लग रहा था कि उनके अतिरिक्त प्रयासों से बच्चे सीख पा रहे थे।

बनवारीलालजी ने कमज़ोर बच्चों को छुट्टी के बाद भी एक घण्टा तक रोककर अलग से पढ़ाने का काम शुरू किया। बच्चे पटरी पर आ रहे थे। हिज्जे करके पढ़नेवाले अब थोड़ा और बेहतर तरीक़े से किताब पढ़ने लग गए थे। 'हासिल' वाले जोड़–घटाने के सवालों को करते समय भी होने वाली ग़लतियाँ कुछ कम हो गई थीं। बनवारीलालजी को भी अच्छा लग रहा था कि उनके अतिरिक्त प्रयासों से बच्चे सीख पा रहे थे।

तभी एक दिन आरपी भैरूलालजी का फ़ोन फिर आ गया। फ़ोन उठाते ही उधर से आवाज़ आई, "कलेक्टर साहब परसों रात्रि-चौपाल में आई रिया है। ओडीएफ़री समीक्षा बैठक लेई सके। हंगळा कागज तैयार राखजो और सारी सूचना मुण्डापे याद राखजो।" ओडीएफ़ का नाम सुनते ही उनका मन खिन्न हो गया। पिछले दिनों विभाग से आदेश आया था कि सुबह तड़के दिशा मैदान की निगरानी करें। गाँव में कोई भी बाहर शौच करता मिले तो उसे समझाएँ कि यह पर्यावरण और स्वयं के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। लोग आपकी बात न मानें तो उनकी फ़ोटो खींचकर भेजें। माड़साब ने ऐसा ही किया और एक जगह पिटते-पिटते बचे थे।

यूँ तो बनवारीलालजी ने स्कूल की छुट्टी के बाद गाँव में घूम-घूमकर सब काग़ज़ पूरे कर लिए थे, पर अभी भी कई घरों में शौचालय निर्माण का काम पूरा नहीं हो पाया था। कुछ घर ऐसे भी थे, जिन्होंने सरकार से मिली राशि को ख़र्च कर शौचालय बनवा तो लिया था, पर उसमें कण्डे और भूसा भर रखा था। इन परिवारों के लोग अभी भी सुबह-सुबह खेतों की ओर लोटा लेकर जाते दिख जाते हैं। लाख समझाने के बाद भी शौचालय में जाने को तैयार नहीं हो रहे हैं। कहते हैं कि भला घर में कैसे कर सकते हैं? आदत नहीं है...सो होती भी नहीं है!

ख़ैर, कलेक्टर साब आ रहे हैं तो सब काग़ज़ तो तैयार रखना ही होगा। गाँव के लोगों को भी बताना होगा कि कलेक्टर साब आ रहे हैं ताकि वे अपने-अपने घर के शौचालय को दुरुस्त रखें। इस काम के लिए अभी निकलना होगा। बनवारीजी ने 'भोजन माता' को कहा कि सभी बच्चों को खाना खिलाकर छुट्टी कर देना। फिर वे अपने काग़ज़ लेकर दुखी मन से गाँव में निकल पड़े। दुखी इसलिए क्योंकि आज जो कुछ पढ़ाने का सोचकर आए थे, वह नहीं पढ़ा सके। साल बीता जा रहा है और वे बच्चों को समय ही नहीं दे पा रहे हैं।

आज फिर उनके फ़ोन पर एक वॉट्सएप सन्देश आया। ज़िला कार्यालय से जारी एक

आदेश की कॉपी है, जिसमें बनवारी माड़साब का भी नाम है। माड़साब जाना नहीं चाहते हैं। उन्होंने अपने ब्लॉक के बीईईओ साब को फोन किया और कहा कि इस साल बच्चों का बहुत हर्जा हो रहा है। कुछ भी पढ़ा नहीं सका हूँ। इस प्रशिक्षण से उनका नाम हटवा दिया जाए तो अच्छा होगा। बीईईओ साब नहीं माने। उन्होंने कहा, "देखो बनवारीलालजी, यह आदेश राज्य स्तर से आया है। नई पाठ्यपुस्तकें लिखी जा रही हैं। डीईओ साब ने आपके अनुभव को देखकर ही आपका नाम जोड़ा है। आप अवश्य जाइए और राज्य के लिए अच्छी पाठ्यपुस्तक निर्माण करने में योगदान दीजिए। सिर्फ़ अपने स्कूल के बच्चों के बारे में मत सोचिए, बल्कि पूरे राज्य के बच्चों के बारे में सोचिए। अच्छी पुस्तक बनने से सभी शिक्षकों और बच्चों का भला होगा।"

सुबह तड़के चार बजे की बस पकड़कर बनवारीलाल माड़साब उदयपुर में स्थित एसआईईआरटी पहुँच गए। इस हॉल में पैंतीस के क़रीब लोग बैठे हैं। कुछ शिक्षक हैं और कुछ शिक्षाविद हैं। शिक्षक, बच्चों को पढ़ाता है और शिक्षाविद शिक्षकों को पढ़ाता है। सामने की गोल घूमने वाली कुर्सी पर बैठी मैडम ने विस्तार से इस परियोजना के बारे में बताया। उन्होंने कहा, "मेरे विद्वान साथियो और विदुषी बहनो, आप सभी का इस छह दिवसीय पाठ्यपुस्तक लेखन कार्यशाला में स्वागत है। जैसा कि आप सबको विदित है कि राज्य शासन के आदेशानुसार नई पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की प्रक्रिया जारी है। माननीय मन्त्री महोदय जी तथा हमारे निदेशक महोदय चाहते हैं कि ऐसी पाठ्यपुस्तकें बनाई जाएँ, जो बच्चों को संस्कारवान बनाएँ और उनके अन्दर देशभक्ति की भावना जागृत करें। पुस्तक लेखन में बच्चों के जीवन से जुड़े रोचक सन्दर्भों के साथ ही हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर और गौरवशाली इतिहास के बारे में बताना चाहिए। आप सभी अनुभवी लोग हैं। हमें पूरी आशा है कि आप मन्त्री महोदय की इच्छा के अनुसार पाठ्यपुस्तक निर्माण में तन-मन से अपना योगदान देंगे।"

पाठ्यपुस्तकें अभी दो साल पहले ही लिखी गई थीं। चुनाव हुए और नई सरकार ने तय किया कि यह पुस्तकें अच्छी नहीं हैं। बस, फिर क्या था– पूरी सरकारी मशीनरी को नए सिरे से किताबें लिखने के काम में झोंक दिया गया था। लेखन समूह का सदस्य बनकर बनवारीजी यहाँ पहली बार आए थे, सो उन्होंने चाय के ब्रेक के समय अपना नादानी भरा सवाल एक साथी शिक्षक रामदयालजी से पूछ लिया,"इतनी जल्दी नई किताब क्यों लिखी जा रही है?"

पाठ्यपुस्तकें अभी दो साल पहले ही लिखी गई थीं। चुनाव हुए और नई सरकार ने तय किया कि यह पुस्तकें अच्छी नहीं हैं। बस, फिर क्या था— पूरी सरकारी मशीनरी को नए सिरे से किताबें लिखने के काम में झोंक दिया गया था। लेखन समूह का सदस्य बनकर बनवारीजी यहाँ पहली बार आए थे, सो उन्होंने चाय के ब्रेक के समय अपना नादानी भरा सवाल एक साथी शिक्षक रामदयालजी से पूछ लिया, "इतनी जल्दी नई किताब क्यों लिखी जा रही है ?"

रामदयालजी पिछली किताबों को लिखने में भी शामिल थे...और पिछली से पिछली में भी...और उससे पहले वाली में भी! उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "नई किताबों से बच्चों में राष्ट्रीयता और नैतिकता की भावना पैदा करने पर ज़ोर दिया जाएगा।"

"लेकिन, पिछली किताब भी तो आप लोगों ने ही लिखी थी। अब ऐसा क्या नया लिख देगें जो तब नहीं लिखा था?" बनवारीलालजी ने सवाल किया।

रामदयाल जी ने चाय की चुस्की के साथ मुस्कराते हुए जवाब दिया, " अरे क्या नया, बस कुछ उदाहरण बदल जायेंगे, कुछ पात्र बदल जायेंगे। कुछ नई स्थितियाँ, नई संख्याएँ, नए नाम जोड़ देंगे और क्या !" यह सुनकर बेचारे

बनवारीलाल जी उनका मुँह ताकते रह गए।

पाठ्यपुस्तक लेखन की यह प्रक्रिया तक़रीबन आठ महीने चली। बनवारीलाल माड़साब को प्रत्येक माह में कम से कम दो बार, चार से छह दिन के लिए उदयपुर जाना होता था। उनके मन में अपने स्कूल के बच्चों की चिन्ता लगातार बनी रहती थी। पर कुछ किया नहीं जा सकता था। बीईईओ साब ने इतना ज़रूर कर दिया था कि पास के स्कूल के एक अन्य शिक्षक को बनवारी माड़साब के स्कूल में प्रतिनियुक्ति पर रख दिया था। वे हाज़िरी वग़ैरह ले लेते थे। 'भोजन माता' समय पर खाना तैयार कर दिया करती थी। बच्चे स्कूल आकर खेलकूद लेते और खाना खाकर घर लौट जाते थे।

उधर, बनवारी माड़साब पुस्तक लेखन कार्यशाला में आ तो जाते थे, पर उनका मन अपने स्कूल के बच्चों के बारे में ही सोचता रहता। वे सोचते कि गाँव के सभी लोग उनकी कितनी इज़्ज़त करते हैं। शादी-ब्याह, तीज-त्यौहार, जन्मदिन-मुण्डन आदि सभी कार्यक्रमों में उनको सबसे पहले निमन्त्रित करते हैं। कोई सलाह लेनी हो तो सबसे पहले उनके पास ही आते हैं। सभी को भरोसा है कि बनवारी माड़साब उनके बच्चों को सही पढ़ा-लिखाकर तैयार कर देंगे। बच्चे भी माड़साब की बहुत इज़्ज़त करते हैं। उनकी कही हर बात मानते हैं। वरना 67 बच्चों को सम्भाल पाना भला उनके बस का होता क्या? इसी तरह की सोच के उधेड़बुन में वे पाठ्यपुस्तक लेखन का काम भी मन से नहीं कर पा रहे थे। पुस्तकों के पाठ पूरे होने को आ गए थे, लेकिन उनमें बनवारी माड़साब का बहुत ही कम योगदान दिखता था।

सभी को भरोसा है कि बनवारी माड़साब उनके बच्चों को सही पढ़ा-लिखाकर तैयार कर देंगे। बच्चे भी माड़साब की बहुत इज़्ज़त करते हैं। उनकी कही हर बात मानते हैं। वरना 67 बच्चों को सम्भाल पाना भला उनके बस का होता क्या? इसी तरह की सोच के उधेड़बुन में वे पाठ्यपुस्तक लेखन का काम भी मन से नहीं कर पा रहे थे। पुस्तकों के पाठ पूरे होने को आ गए थे, लेकिन उनमें बनवारी माड़साब का बहुत ही कम योगदान दिखता था।

लेखक समूह के साथी भी बनवारीजी के मन की भावनाओं से परिचित थे। वे उनसे बहुत अपेक्षा नहीं करते थे। गणित विषय की पाठ्यपुस्तकों के लेखन समूह की समन्वयक कविताजी अपने काम के प्रति बहुत ज़िम्मेदार थीं। वे अपने काम को समय पर पूरा करने के लिए जानी जाती थीं। एक दिन उन्होंने बनवारीलाल माड़साब के पास आकर कहा, "बनवारीजी, पहली से पाँचवीं तक की पाठ्यपुस्तकों के सभी पाठ तो लिखे जा चुके हैं। मैंने इन पाठों को चित्रकारों के पास भेज दिया है। जल्द ही चित्र बनकर आ जाएँगे। आपने प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ काफ़ी काम किया है। आप उनकी रुचियों और अनुभवों के बारे में जानते हैं। मैं चाहती हूँ कि आप जोड़ व घटाने आदि की अवधारणाओं पर आधारित कुछ अच्छे सवाल बना दीजिए। अच्छा होगा यदि आप एक-दो उदाहरणों से इन्हें हल करने का तरीक़ा भी समझा दें। इन उदाहरणों और सवालों को हम पाठ्यपुस्तक में देंगे ताकि बच्चे स्वयं इनका अभ्यास कर सकें।"

कविता मैडम द्वारा दिए गए कुछ पाठों को लेकर बनवारी माड़साब देर तक सोचते रहे। वे बहुत देर तक सोचते रहे कि किस तरह के उदाहरण देना चाहिए, और कैसे सवाल बनाने चाहिए। अन्ततः उन्होंने एक सादे काग़ज़ पर कुछ उदाहरण और सवाल लिखकर पाठ के पीछे नत्थी कर दिए। शाम को जब कविता मैडम सभी से सामग्री जमा कर रही थीं, तो बनवारी माड़साब ने भी अपना काम जमा कर दिया। कविता मैडम जल्दी में थीं। वे सभी सवालों को तो नहीं पढ़ सकीं, लेकिन सरसरी तौर पर ऊपर दिए गए दो उदाहरणों को उन्होंने देख लिया। यह दोनों उदाहरण उन्हें अच्छे लगे। साथ ही उन्हें यह भी

अच्छा लगा कि आज बनवारी सर ने भी अपना काम समय पर पूरा करके दिया है। कार्यशाला का समापन हुआ और सभी लोग अपने-अपने ज़िलों को प्रस्थान कर गए।

इस तरह कुछ माह और बीते। नई पाठ्यपुस्तकें छपकर आ चुकी थीं। जयपुर में एक बड़े कार्यक्रम में इन पाठ्यपुस्तकों का विमोचन किया गया। नए सत्र में स्कूल खुलने से पहले ही ग्रीष्मकालीन शिक्षक प्रशिक्षणों द्वारा पूरे राज्य के शिक्षकों को नई पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था। सभी के हाथ में नई पाठ्यपुस्तकों की प्रतियाँ थीं। दक्ष प्रशिक्षक महोदय बच्चों को गतिविधि और रोचक सन्दर्भों द्वारा शिक्षण के तरीक़ों पर अपनी व्याख्या कर रहे थे। इसी कक्ष में बनवारी माड़साब भी बैठे थे। दक्ष प्रशिक्षक की बातों से बेपरवाह वे तेज़ी से पुस्तक के पन्नों को पलटते हुए कुछ खोज रहे थे। उनकी नज़रें कुछ पन्नों पर ठहरकर कुछ पढ़तीं और चेहरे पर हल्की सी मुस्कान तैर जाती। बनवारी माड़साब द्वारा लिखे गए जोड़ व बाक़ी के उदाहरण और सवाल जस के तस छपे थे–

1. स्वच्छ भारत के अन्तर्गत राजस्थान के एक ज़िले में 327 शौचालय स्वीकृत किए गए। वर्ष के अन्त तक 283 शौचालय पूर्ण हो पाए। बताइए, कितने शौचालय बनाने शेष रहे?
2. एक विद्यालय की एसएमसी को सर्व शिक्षा अभियान द्वारा वर्ष 2014-15 में शौचालय की सफ़ाई हेतु 5000 रुपए जारी किए गए। उसमें से विद्यालय द्वारा 3850 रुपए ख़र्च किए गए। बताओ, कितनी राशि शेष बची?
3. पल्स पोलियो अभियान के तीन चरणों में बगवास पंचायत के कुल 8976 बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई गई। पहले चरण में 2780 बच्चों को एवं दूसरे चरण में 2925 बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई गई। बताइए, तीसरे चरण में कुल कितने बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई गई?
4. गाँव टिम्बाड़ी की जनसंख्या 479 है। इनमें से पुरुष व बच्चों की संख्या 281 है। तो बताइए, गाँव में महिलाओं की संख्या कितनी है?
5. वर्ष 2001 में तलवाड़ा नगर की जनसँख्या 3,38,401 थी। वर्ष 2011 तक जनसँख्या में 88,765 की वृद्धि हो गई। वर्ष 2011 में इस नगर की जनसँख्या क्या थी?
6. मध्याह्न भोजन में प्रति बालक 150 ग्राम गेहूँ और 100 ग्राम चावल के हिसाब से 60 बच्चों के लिए कितने गेहूँ और चावल की आवश्यकता होगी?
7. किसी स्कूल को विद्यालय सुविधा अनुदान के तहत 5000 रुपए प्राप्त हुए। स्कूल की विभिन्न सुविधाओं पर 4835 रुपए ख़र्च हो गए। बताओ, कितने रुपए शेष बचे?
8. सन् 2011 की जनगणना के अनुसार साकरिया गाँव में 4632 महिलाएँ और 4598 पुरुष हैं, तो बताओ, गाँव की कुल जनसंख्या कितनी है?

बनवारीलाल माड़साब के लिखे इन सवालों में उन सभी सवालों का अक़्स था, जिनको लेकर वे परेशान रहा करते थे। जिन सवालों को वे सभी प्रशिक्षणों में उठाया करते थे। अपने से वरिष्ठ अधिकारियों से पूछा करते थे, कोई उनके सवालों को नहीं सुनता था। कोई इन सवालों के सन्तोषजनक जवाब नहीं देता था। जवाब तो क्या, अधिकारी इन सवालों को सुनना तक पसन्द नहीं करते थे।

आज बनवारीलाल माड़साब बहुत खुश थे। उनके यह सवाल आज पूरे राज्य के शिक्षकों तक पहुँच चुके थे। शिक्षा विभाग के अधिकारियों तक पहुँच चुके थे। स्कूल जाने वाले हर एक बच्चे के बस्ते से होते हुए घर-घर में पहुँच चुके थे। अब बनवारीलालजी के सवालों की

गूँज, उनके कुछ बोले बिना ही दूर तक सुनी जा सकती थी। बनवारीजी को मालूम था कि इतने भर से कुछ होने वाला नहीं है। उनके लिए परिस्थितियाँ शायद वैसी ही रहें जैसी कि पहले थीं, लेकिन अपने सवालों को सब तक पहुँचा देने भर से दिल को मिलने वाले सुकून और ख़ुशी को उनके चेहरे पर साफ़ पढ़ा जा सकता था। वे ख़ुश थे क्योंकि उनके सवाल सब तक पहुँच चुके थे।

बनवारीलालजी किताब के इस पन्ने को बहुत ग़ौर से देख रहे थे। तभी सामने खड़े एमटी महोदय ने कहा, "कसी क लागी नई किताबाँ?"

इतने में बनवारीलालजी के पास बैठे एक अन्य शिक्षक ने कहा, "अरे कई देखो माड़साब, ई किताबाँ तो वर दो वर ऊँ मरजी आवे ज्यूँ सरकाराँ बदल देवे है।"

बनवारीलालजी ने मुस्कराते हुए कहा, "नी माड़साब, अब की किताबाँ तो घणी अच्छी हैं, ई में सवाल घणा बढ़िया छाप्या है!"

मोहम्मद उमर विगत दो दशकों से विज्ञान एवं गणित शिक्षण, लेखन एवं शिक्षक प्रशिक्षण के कार्य जुड़े हुए हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन राजस्थान मे गणित विषय के सन्दर्भ सदस्य के रूप मे कार्यरत हैं।
सम्पर्क : umar.jckm@gmail.com